नरेन्द्र मोदी : 'दिल्ली में आया तो हिटलर बन जायेगा'

– **मनोज कुमार झा**

आखिरकार, भारतीय जनता पार्टी ने नरेन्द्र मोदी को गोवा में अपना सबसे बड़ा नेता घोषित कर ही दिया। यद्यपि औपचारिक तौर पर उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं किया गया है, लेकिन यह स्पष्ट है कि मोदी ही भाजपा की तरफ से इस पद के उम्मीदवार होंगे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का वरद हस्त उन पर है। भाजपा में संघ के चाहे बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी जैसे मंजे हुए नेताओं ने भाजपा को स्वायत्त बनाने की काफी कोशिश की, पर सफल नहीं हो पाए। भूलना नहीं होगा कि 'जिन्ना प्रकरण' के बाद संघ के दबाव पर ही आडवाणी को भाजपा अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा था। संघ ने ही टुच्चे, की कमीशनखोर और उद्योगपतियों-व्यवसायियों से पैसा उगाहने वाले प्रमोद महाजन को आगे बढ़ाया था और संघ ने ही महाभ्रष्ट गडकरी को भाजपा अध्यक्ष बनवाया था, अंतत: जिन्हें भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण ही इस्तीफा देना पड़ा। फिर संघ ने ही राजनाथ सिंह को भाजपा अध्यक्ष बनवाया है, जिनका अपना कोई व्यक्तित्व ही नहीं है। भाजपा में कई नेता उन पर भारी पड़ते हैं।

पार्टी में मोदी के लगातार बढ़ते प्रभाव और अपनी उपेक्षा से आडवाणी क्षुब्ध थे। यही कारण है कि वे गोवा नहीं गए और मोदी के चुनाव प्रचार अभियान समिति का अध्यक्ष चुन लिए जाने के बाद तमाम पदों से इस्तीफा देकर भाजपा में भूचाल ला दिया। आखिर, काफी मान-मनौव्वल के बाद उन्होंने इस्तीफा वापस भी ले लिया तो ऐसा सिर्फ पार्टी की और अपनी भी लाज बचाने के लिये। उनके क्षोभ को इस बात से समझा जा सकता है कि संघ प्रमुख मोहन भागवत जब उनसे मिलने दिल्ली पहुंचे तो उन्होंने तत्काल मुलाकात भी नहीं की। संघ आडवाणी को पूरी तरह दर किनार इसलिए नहीं करना चाहता, क्योंकि उसे पता है कि अभी भी उनकी छवि को भुनाया जा सकता है। आखिर वो 'रामरथी' जो हैं। भूलना नहीं होगा कि भाजपा को सत्ता के शीर्ष तक पहुंचाने में आडवाणी की मुख्य भूमिका रही है। उन्हें अगर पूरी तरह से अलग-थलग कर दिया जाता है तो भाजपा भाजपा ही नहीं रह जायेगी। भाजपा टूट-बिखर जाएगी। मोदी के कमान संभाल लेने के बाद राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन टूट बिखर गया ही। इसका मुख्य घटक दल जनता दल (यूनाइटेड)अलग हो गया। बिहार में नीतिश सरकार से भाजपा के मंत्री निकाल बाहर कर दिए गए। अब नीतीश बिहार में भाजपा की जड़ खोद डालेंगे। भाजपा के बिना भी उनकी सरकार चल रही है और समीकरण ऐसे हैं कि चलती भी रहेगी। मोदी समर्थकों ने टुच्चेपन की हद तो यह कर दी कि आडवाणी के घर के आगे प्रदर्शन करने लगे। बावजूद इसके आडवाणी ने इस टुच्चेपन पर कोई प्रतिक्रिया न जाहिर कर अपने व्यक्तित्व की गरिमा को बनाये रखा।

मोदी दिल्ली गए आडवाणी से आशीर्वाद लेने। पर मोदी को यह भूलना नहीं चाहिए कि भाजपा में आडवाणी समर्थक गुट उनकी राह में रोड़े अटकाने से बाज नहीं आयेगा। मोदी अटल-आडवाणी की तरह भाजपा के सर्वमान्य नेता नहीं हो सकते। अभी तक उनकी अखिल भारतीय पहचान बन नहीं पाई हैऔर बन भी नहीं सकती। ये देश के दलाल पूंजीपतियों के दलाल नेता है। ये गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले नेता हैं।

संघ का एकमात्र एजेंडा है हिंदुत्व और यह देश सिर्फ हिंदुओं का नहीं। हज़ारों बरसों के इतिहास में कभी भी नहीं रहा।

संघ प्रमुख मोहन भागवत कहते हैं कि हिंदुत्व ही देश को बचायेगा। पर किससे बचायेगा? इस देश के लिये सबसे बड़ा ख़तरा तो हिंदुत्व ही बना हुआ है। दुनिया कहां से कहां चली जा रही है और ये हिंदु राज लाने की खामख्याली में जी रहे हैं। क्या हिंदुत्व मोदी की तरह हज़ारों-हज़ार मुसलमानों का संहार करके देश को बचाएगा? क्या नरोदा पाटिया देश को बचायेगा? होना तो ये चाहिये था कि मोदी पर नरसंहार का मुकदमा चलाया जाता। पर कौन चलाए? भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी कांग्रेस भी कम सांप्रदायिक नहीं। ख़तरनाक बात तो ये है कि सेकुलरिज़्म का नकाब ओढ़ कर ये हिंदू संप्रदायवाद और मुस्लिम अल्पसंख्यकवाद, दोनों नावों की सवारी करती है। क्या शाहबानो प्रकरण को भुलाया जा सकता है, जिसमें उच्चतम न्यायालय के फैसले को राजीव सरकार ने संसद में मुस्लिम महिला अधिनियम (1986) पारित कर पलट दिया था। इसकी पूरे देश भर में घोर निंदा हुई थी। बाबरी मस्जिद विध्वंस के समय नरसिंहराव सरकार ने जो भूमिका निभाई थी, उससे भी कांग्रेस के चरित्र को समझा जा सकता है और रामजन्मभूमि का ताला खुलवा कर स्वयं राजीवगांधी ने जाने-अनजाने 'अयोध्या कांड' की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी।

आज सोनिया-मनमोहन के शासन में कांग्रेस की स्थिति ऐसी हो गई है कि उस पर कांग्रेस के सहयोगियों को भी भरोसा नहीं रहा। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन में शामिल सभी दल अवसरवादी हैं और वक्त आते ही डूबने जा रहे इस जहाज को छोड़ भाग निकलेंगे। भ्रष्टाचारियों के सिरमौर शरद पवार ने शुरूआत कर दी है। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार से अपने दल के सभी मन्त्रियों के इस्तीफ़े दिलवा दिए हैं।

देश अभूतपूर्व राजनीतिक संकट के दौर से गुजर रहा है। अर्थव्यवस्था धराशाई हो चुकी है। नेशनल सैंपल सर्वे ने जो ताजा आंकड़े जारी किये हैं, वे अर्थव्यवस्था की भयावह तस्वीर को दिखाते हैं। कंगाली-बदहाली इस कदर बढ़ रही है कि विकास के सारे दावे थोथे साबित हो रहे हैं। 90 प्रतिशत आबादी रसातल में जा रही है, 10 प्रतिशत आबादी तथाकथित का विकास का आनंद ले रही है। ऐसे में समाज ज्वालामुखी के मुहाने पर है। कभी भी ज्वालामुखी फट सकता है।

जनता, सोनिया-मनमोहन सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए बेताब है, पर क्या विकल्प नरेंद्र मोदी हैं?

नेताओं पर जनता को भरोसा नहीं और राजनीति में क्षत्रपों के उभार से नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने की राह में मुश्किलें बहुत हैं। सबसे बड़ी मुश्किल तो अभी उनकी पार्टी भाजपा में ही है। नरेन्द्र मोदी भाजपा में सर्वमान्य नेता नहीं हैं। उनका कद अटल-आडवाणी जैसा न है, न कभी हो सकता है। उनके कई प्रतिद्वन्द्वी हैं। शिवराज सिंह चौहान, सुषमा स्वराज और वसुंधरा राजे भी, अभी निर्वासित जीवन जी रहे संघ और भाजपा के पूर्व थिंक टैंक के.एन.गोविंदाचार्य ने भी नरेन्द्र मोदी के प्रतिकूल टिप्पणी की है। आडवाणी के करीबी सुधीन्द्र कुलकर्णी ने तो नरेन्द्र मोदी पर खुलकर प्रहार किया है। विदेशी मीडिया भी नरेन्द्र मोदी को राष्ट्रीय कद का नेता नहीं मानता।

और यदि भाजपा नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर भी दे तो क्या वे प्रधानमंत्री बन जाएंगे?

राजनीति के शतरंज के सिद्धहस्त खिलाड़ी आडवाणी ने पहले ही कहा था कि भाजपा लोगों की उम्मीदों पे खरी नहीं उतरी है। कांग्रेस अगर सत्ता में नहीं आती तो भाजपा का भी सत्ता में आना कठिन है। आडवाणी का यह कहना सच है और उन्होंने सच कहा, ये काबिले तारीफ है।

पर हिंदुत्व के नशे में उन्मत्त संघ नेतृत्व को यह सच दिखाई नहीं पड़ता। इसलिए, एक बार फिर हिंदुत्व का उन्माद पैदा करने के लिये उसने दंगाई नरेन्द्र मोदी को आगे कर दिया है। जनता सावधान हो जाए, क्योंकि यह उसे लुभाने की हर तिकड़म करेगा। अभी यह लोहा मांग रहा है जनता से। सरदार पटेल की सबसे ऊंची प्रतिमा स्थापित करने के लिए। यह खुद को लौह-पुरूष के रूप में स्थापित करना चाहता है, पर इसका चरित्र क्या है, पेश हैं कुछ पंक्तियां –

लोहा मांग रहा है 'लीडर' छुरे बनाएगा
लोहा देने वालों की ही गर्दन काटेगा।
मत्था टेकने जा रहा ये इसका ड्रामा देखो
अयोध्या में फिर ये कत्लेआम करायेगा।
भूखे-नंगे जिस्म बेचते बाज़ारों में
टाटा-अंबानी का चाकर मौज उड़ाएगा।
शेर बना ये घूम रहा रंगा सियार है पक्का
जनता का दुश्मन है ये आग लगाएगा।
रक्त पिपासु ये इसके मुंह में खून लगा है
पक्का दंगाई है ये तो देश जलाएगा।
इसे जरा पहचानों लोगों ये है शातिर खूनी
दिल्ली में आया तो हिटलर बन जायेगा।

सेकुलरिज़्म मुद्दा नहीं 'फूट डालो राज करो' सोनिया, नौतीश कुमार, नरेन्द्र मोदी

– **मनोज कुमार झा**

नरेन्द्र मोदी को भाजपा चुनाव प्रचार अभियान समिति का प्रमुख बनाये जाने के बाद बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी सरकार से भाजपाई मंत्रियों को निकाल बाहर कर दिया और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से भी नाता तोड़ लिया। इस पर सोनिया के कठपुतले प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने उन्हें 'सेकुलर' होने का तमगा दे दिया। नीतिश कुमार ने इस पर आभार प्रकट किया। इधर, जनतादल (यूनाइटेड) प्रमुख शरद यादव ने कहा कि अगर भाजपा की कमान लाल कृष्ण आडवाणी को सौंपी जाये तो जेडी (यू) फिर राजग से जुड़ सकता है। क्या इसका मतलब यह है कि आडवाणी सेकुलर लीडर हैं, क्या अटल-आडवाणी के नेतृत्व में भाजपा एक सेकुलर पार्टी थी? क्या नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किए जाने से भाजपा साम्प्रदायिक हो गई? आडवाणी ने जो रामरथ यात्रा की थी, क्या वह साम्प्रदायिकता से ओत-प्रोत नहीं थी, जिसका परिणाम बाबरी मस्जिद के विध्वंस और उसके बाद होने वाले दंगों के रूप में सामने आया। इसी की चरम परिणति गोधरा कांड में हुई और इसके बाद सुनियोजित रूप से मोदी द्वारा किये गये मुसलमानों के नरसंहार के रूप में। इसी के बाद मोदी ऐसे खलनायक के रूप में उभरे, जो अब देश का भाग्यविधाता बनने का दावा कर रहे हैं। बिहार में नीतीश कुमार जातिवादी समीकरणों और अपराधियों के गठजोड़ से सरकार चला रहे हैं।

मोदी उन्हें दुश्मन इसलिये नजर आते हैं कि अगर उन्होंने मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा का साथ दिया तो बिहार के मुसलमान उन्हें वोट नहीं देंगे। मुस्लिम वोट बैंक पर ही नीतीश की सरकार टिकी हुई है। इसलिए राजग से बाहर आना इनके लिये स्वाभाविक था। पर ये कांग्रेस से नजदीकी बढ़ाते हैं, जिसके कुछ संकेत मिल रहे हैं तो यह इनके लिए आत्मघाती होगा। अगले आम चुनाव में जनता कांग्रेस की ताबूत में आख़िरी कील ठोकेगी। जनता की दुश्मन इस पार्टी के लिए माकूल जगह अब कब्रगाह ही बच गई है।

क्या गांधी सेकुलर थे? क्या नेहरू सेकुलर थे? क्या जे.पी. सेकुलर रह पाये? क्या लेफ्ट सेकुलर है? क्या गांधी-नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस सेकुलर होती तो देश का विभाजन होता? ये सवाल अनुत्तरित हैं। इतिहास में सामग्री बिखरी पड़ी है इन सवालों का जवाब तलाश करने के लिए।

दुर्भाग्य है कि देश में अब तक जनता का इतिहास-जनइतिहास लिखा नहीं जा सका। प्रोफेसर लाल बहादुर वर्मा जैसे इतिहासकार और सांस्कृतिक-सामाजिक कार्यकर्ता इस दिशा में प्रयत्नशील रहे हैं, पर ज़्यादातर इतिहासकार, समाजशास्त्री और राजनीति विज्ञान संस्थानों से जुड़े हुए हैं और उनके अध्ययन के विषय निश्चय ही जनकेंद्रित नहीं रहे हैं, कुछ चुनिंदा अपवादों को छोड़ कर। प्रोफेसर लाल बहादुर वर्मा का स्पष्ट मत है कि भारतीय राजनीति में अब सेकुलरिज़्म कोई मुद्दा ही नहीं रह गया है। चुनावी राजनीति में लगे सभी दल इस मुद्दे पर सिर्फ जनता को बरगला रहे हैं। लेफ्ट भी सेकुलर नहीं। सेकुलरिज़्म ब्रांड बन कर रह गया है। ऐसा आखिर क्यों हुआ, इसकी जड़ें भारतीय इतिहास के औपनिवेशिक काल में गहरी धंसी हुई हैं।

राष्ट्रवाद और संप्रदायवाद, एक साथ उभरकर सामने आये। 'ईश्वर-अल्ला तेरो नाम, सबको सम्मति दे भगवान।' ये है नारा भारतीय सेकुलरिज़्म का, जो सर्व धर्म समभाव पर आधारित है। लेकिन हर धर्म एक-दूसरे से अपने को श्रेष्ठ बताता है।

यूरोप में धर्मसुधार आंदोलन चला था और पुनर्जागरण का क्रांतिकारी दौर। भारतीय इतिहास के उत्तर मध्यकाल में भक्ति आंदोलन जरा भी कमतर नहीं था। 'भ्रष्ट गिरजे को नष्ट कर दो' का आह्वान करने वाले क्रांतिकारी दार्शनिक वाल्तेयर से कबीर की तुलना की जा सकती है। वाल्तेयर को अगर वास्तीय के किले में कैद किया गया तो कबीर की हड्डी-पसली भी तोड़ दी गई (पढ़ें, कबिरा खड़ा बजार में, भीष्म साहनी)।

और तुलसीदास के समकालीन 'अकबर द ग्रेट' का दीन-ए इलाही क्या गांधी-नेहरू के सेकुलरिज़्म की अवधारणा को टक्कर नहीं देता। अकबर ने जो अनपढ़ था, इस्लामिक कट्टरपंथियों को जरा भी तवज्जो नहीं दी। सभी धर्मों के प्रवक्ता उसके दरबार में खुली बहस करते थे और उन बहसों के निचोड़ के रूप में सर्वधर्म समभाव पर आधारित 'दीने इलाही' उसने चलाया। फिर वह गांधी और नेहरू से जरा भी कम दूर दृष्टि वाला शासक तो नहीं था। औपनिवेशिक हस्तक्षेप ने भारत ही नहीं, एशिया भर में इतिहास के रूप में पहिए को उलटा मोड़ने का काम किया। उपनिवेशवाद ने भारत में विध्वंसकारी भूमिका निभाई, यद्यपि कार्ल मार्क्स ने माना था कि इसने कुछ पुनरजागर्णकारी भूमिका भी निभाई, पर बाद में उन्होंने अपनी मान्यता में बदलाव किया।

भारतीय विकास बाधित रहा। आधुनिक मार्क्सवादी अर्थशास्त्रियों और इतिहासकारों के अनुसार यहां 'अल्पविकास का विकास' यानी 'डेवलपमेंट ऑफ अंडरडेवलपमेंट' ही हुआ।

अब नवसाम्राज्यवाद के इस दौर में उदारवाद की जो आंधी चली है, तथाकथित 'ग्लोबलिज़्म' का जो युग शुरू हुआ है, उसने राष्ट्रीय पूंजीवाद जैसी धारणा को झुठला दिया है। भारतीय पूंजीपति वर्ग विश्व साम्राज्यवाद की दलाली कर अपने लिए 'एंटीलिया' जैसे ऐशगाहों में जनता की दमड़ी निचोड़ कर 'सरकारी-राजकीय' सुरक्षा के बंदोबस्त तले अपनी बीवियों का 'क्लासिक' डांस देख वक़्त गुजार रहा है। भीख मांगने वाली जवान औरतें पहले जहां मंदिरों और मस्जिदों के सामने दिखाई पड़ती थीं, अब शराबखानों के सामने जिस्म परोसने को तैयार बैठी दिखाई पड़ती हैं।

ऐसे में सिर्फ यही कहा जा सकता है-'ईश्वर अल्ला तेरो नाम, सबको सम्मति दे भगवान'।

उपरोक्त ऐतिहासिक-सामाजिक पृष्ठभूमि में भारतीय राजनीति में सेकुलरिज़्म कोई मुद्दा ही नहीं है। इसे मुद्दा बनाया जा रहा है छल-फरेब और लूट पर आधारित चुनावी राजनीति का। जनता तो इस 'लोकतंत्र' में भेड़ के समान है और सभी दलों के नेता भेड़िये। लूटतंत्र बन गया है यह जनतंत्र। त्राहिमाम कर रही है जनता। भेड़िया गुर्रा रहा है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने लिखा था-

'भेड़िया गुर्राता है
तुम मशाल जलाओ
भेड़िया मशाल नहीं जला सकता।'
कौन जलाएगा मशाल?

इस सभ्यता का इतिहास है तो भविष्य भी।

पहाड़ों-जंगलों में लाखों मशालें जल उठेगी और मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण पर आधारित यह व्यवस्था भस्म हो जाएगी। इस पर कोई आंसू नहीं बहाएगा। नज़ीर सामने है। फिलहाल, राजनीति में सेकुलरिज़्म कोई मुद्दा ही नहीं, सोनिया हों नीतीश या मोदी, इनके सामने सवाल एक ही है-कैसे चूस लो रक्त की अंतिम बूंद फटेहाल जनता की। औपनिवेशिक शासक भी इनके आगे पानी भरते नजर आते हैं। उन्होंने भी नहीं सोचा होगा कि 'फूट डालो और राज करो' का उनका नुस्खा आजाद भारत में इस कदर लीडरों का औजार बन जाएगा।